# सर्पदंश की दवा का विकास थम गया है

एक ओर तो आधुनिक चिकित्सा तेज़ी से प्रगति कर रही है, वहीं सांप काटे की दवा के विकास के मामले में हम बहुत पिछड़ चुके हैं। तथ्य यह है कि दुनिया भर में सांप काटने से प्रति वर्ष 2 लाख लोग मारे जाते हैं और कई लाख लोग अपंग हो जाते हैं। देखा जाए तो मच्छर (जो कई रोगों के वाहक हैं) के बाद सांप ही दूसरा सबसे ज़्यादा जानलेवा जंतु है। मगर सर्पविष की दवा के विकास के मामले में सर्पदंश की यह महत्वपूर्ण बात नहीं झलकती।

हाल ही में डॉक्टर्स विदाउट बॉर्डर्स (सरहदों से मुक्त डॉक्टर्स) नामक संगठन ने बताया है कि औषधि जगत की अग्रणी कंपनियां सर्पविष की दवा से हाथ खींच रही हैं। मसलन, पता चला है कि फ्रांसीसी दवा कंपनी सैनोफी पाश्चर द्वारा बनाए गए प्रतिविष (एफएवी-अफ्रीके) की आखरी खेप जून 2016 में एक्सपायर हो जाएगी। सैनोफी ने इसका उत्पादन 2014 में बंद कर दिया था। बेरिंगविके और वेथ जैसी कंपनियां पहले ही ऐसे कदम उठा चुकी हैं। सर्प प्रतिविष उत्पादन से हाथ खींच लेने का इनका प्रमुख कारण यह है कि इसमें उतना मुनाफा नहीं है।

सर्पदंश के उपचार की स्थिति इतनी विकट हो चुकी है कि डॉक्टर्स विदाउट बॉर्डर्स ने सर्पदंश को दुनिया की सबसे ज़्यादा उपेक्षित जन स्वास्थ्य समस्या कहा है। अक्टूबर में ऑक्सफोर्ड में आयोजित विष विज्ञान सम्मेलन में कई विशेषज्ञों ने विश्व स्वास्थ्य संगठन से अपील की कि वह सर्पदंश को एक उपेक्षित कटिबंधीय रोग घोषित करे।

प्रतिविष के विकास का काम मूलतः धन के अभाव में रुका है। ऐसा नहीं है कि शोधकर्ताओं के पास इस दिशा में कोई विचार नहीं हैं मगर उन विचारों पर काम करने के लिए धन मिलना मुश्किल हो गया है। प्रतिविष बनाने के लिए आम तौर पर सांप का विष किसी पशु के शरीर में प्रविष्ट कराया जाता है और फिर उस पशु के शरीर में बनी एंटीबॉडीज़ को एकत्रित किया जाता है। पशु को विष इतनी कम मात्रा में दिया जाता है कि वह विषैला नहीं होता। मगर इस तरीके से प्रतिविष बनाने का मतलब यह होता है कि सांप की हर प्रजाति और हर किस्म के लिए अलग प्रतिविष तैयार करना ज़रूरी होता है। सर्पदंश का कोई ऐसा प्रतिविष नहीं जो सारे सांपों के ज़हर के खिलाफ कारगर हो।

इस तरह के सार्वभौमिक प्रतिविष को संभव बनाने के लिए प्रयास चल रहे हैं। एक कोशिश यह है कि प्रतिविष की खुराक को सस्ता किया जा सके। इस दिशा में एक कोशिश यह भी चल रही है कि पशुओं की बजाय एंटीबॉडीज़ का उत्पादन बैक्टीरिया में करवाया जाए ताकि लागत कम हो सके। इस तरह की एक परियोजना के लिए फंडिंग न मिलने के कारण शोधकर्ताओं ने आम लोगों से फंड जुटाने की कोशिश शुरू कर दी है। इसे क्राउडफंडिंग कहते हैं।

सर्पदंश की दवा किसी अस्पताल में ही देनी होती है मगर दिक्कत यह होती है कि मरीज़ अस्पताल तक पहुंच ही नहीं पाता। इसके लिए कुछ शोधकर्ता कोशिश कर रहे हैं कि कोई ऐसी दवा विकसित कर ली जाए जो प्राथमिक उपचार के तौर पर दी जा सके और मरीज़ को अस्पताल पहुंचने की मोहलत मिल जाए। ***(स्रोत फीचर्स)***


**स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं**

*वार्षिक सदस्यता*
*व्यक्तिगत 150 रुपए*
*संस्थागत 300 रुपए*

**सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर या मल्टीसिटी चेक से भेजें।**